ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 265-266

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

भारत में ग्रामीण महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक समस्याएं

मधुलिका सिंह

शोध अध्येत्री– समाजशास्त्र, हंडिया पी० जी० कॉलेज, हंडिया, प्रयागराज (उ0प्र0) भारत

Received-13.12.2023, Revised-20.12.2023, Accepted-25.12.2023 E-mail: madhulikasingh164@gmail.com

सारांशः ***महिलाएं समाज का अभिन्न अंग है। उनकी संख्या लगभग पुरुषों के बराबर है। भारत में महिलाओं की स्थिती सदैव एक समान नहीं रही है, इसमें युगानुरूप परिवर्तन होते रहे है, महिलाओं की स्थिती वैदिक युग से लेकर आधुनिक काल तक उनके उतार चढ़ाव आते रहे है, तथा उनके अधिकारों में तदनरूप बदलाव भी होते रहे है। वैदिक युग में स्त्रियों की स्थिती सुदृढ़ थी,परिवार तथा समाज में उन्हें सम्मान प्राप्त था, परंतु मध्यकाल आते–आते महिलाए घर तक सीमित कर दी गई। आज ग्रामीण भारत में महिलाओं की स्थिति क्या है इस विषय पर ध्यान आकृष्ट किया गया है। भारतीय गाँवों में बेरोजगारी,अशिक्षा,अंधकार,पानी बिजली, आवास, अंधविश्वास,सड़क,सिचाई आदि कई समस्याए किसी से छुपी नहीं है। उद्योग धंधों की कमी के कारण गाँव के लोग रोजगार के लिए मुख्य लिए मुख्य रूप से कृषि पर निर्भर है। कृषि रोजगार का मुख्य स्रोत होने के कारण किसान मौसमी बेरोजगारी से भी जूझ रहे है।***

कुंजीभूत शब्द– महिलाएं समाज, युगानुरूप परिवर्तन, वैदिक युग, आधुनिक काल, बेरोजगारी,अशिक्षा,अंधकार,आवास, कृषि ।

हमारा देश एक विकासशील देश है यहाँ की 70 प्रतिशत जनसंख्या गाँवों में निवास करती है। जहां आज भी जीविका का मुख्य स्त्रोत कृषि ही है मौसम अनुरूप ही होते है। जहां तक महिलाओं की स्थिती है तो गावों में आज की पित्तसात्मक सामाजिक व्यवस्था वाली मनोवृत्ति विदमान है, जो ये मान कर चलती है कि महिलाए दोयम दर्जे की नागरिक है तथा संपत्ति, स्वास्थ्य, शिक्षा यहा तक की स्वयं के शरीर पर प्राकृतिक अधिकार से वंचित कर दिया गया है।

ग्रामीण समाज की महिलाओं की समस्याए कुछ अलग प्रकृति की है। ग्रामीण समाज में 90 प्रतिशत महिलाएं खेती पर निर्भर है तथा असंगठित क्षेत्रों में 98 प्रतिशत महिलाएं है। ग्रामीण महिलाओं को लगातार 16–18 घंटे कार्य करना पड़ता है। ग्रामीण क्षेत्र में पिछड़ेपन का एक मात्र कारण सही शिक्षा प्रबंध का न होना है, एक औरत बच्चे को जन्म देती है और पूरी जिंदगी उस बच्चे के प्रति अपनी सारी जिम्मेदारियों को निभाती है बदले में वह कुछ भी नहीं मांगती है और पूरी जिंदगी उस बच्चें के प्रति अपनी सारी जिम्मेदारियों को निभाती है बदले में वह कुछ भी नहीं मांगती है और पूरी सहनशीलता के साथ बिना तर्क किए अपनी सारी भूमिकाए पूरा करती है। ग्रामों में महिलाओं से ये अपेक्षा की जाती है कि वह घर में रहकर सेवा–भाव ही करें और पारिवारिक जिम्मेदारिया निभाए ग्रामीण पुरुषों की यही विचार धारा महिलाए घर तक ही सीमित रहे उनका बाहरी जीवन से कोई सारोकार नहीं होना चाहिए। इस प्रकार समाज ने उन्हें घर में सीमित कर पुरुषों पर निर्भर बना दिया जो सदियों से चलता आ रहा है। परंतु समय स्थिती के परिवर्तन के साथ इस प्रकार की सोच में बदलाव आए है अब महिलाए भी अपने अधिकार के लिए जागृत हुई है। महिलाओं को जरूरत है की वे अपनी क्षमता को पहचानें और प्रयास करें की अपने परिवार के साथ साथ देश समाज के विकास के प्रति भी अपनी भूमिका निभा सकें।

ग्रामीण महिलाओं की प्रमुख समस्याए– हमारे देश में ग्रामीण समाज में रहने वाली महिलाओं को बचपन से लेकर वृद्धावस्था तक ढेर सारी समस्याओं से जूझना पड़ता है,और ये समस्याएं महिलाओं के प्रगति के मार्ग में बाधा उत्पन्न करती है। समस्याए, स्वास्थ्य,शिक्षा,शादी पारिवारिक एवं आर्थिक स्थिती से संबंधित होती है। ग्रामीण समाज में रहने वाली महिलाओं का जीवन अधिकतर खेती बाड़ी पर निर्भर करता है। इसके अलावा घर के काम परिवार एवं बच्चों की देखभाल करनी पड़ती है, जिसके चलते उन्हें काफी सारी समस्या होती है।

1. ग्रामीण महिलाओं में शिक्षा संमबंधित समस्याएं– ग्रामीण महिलाओं की समस्या में एक लड़की के जन्म लेने के बाद दूसरी समस्या शिक्षा संबधित होती है प्रायः देखा जाता है कि ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाली महिला बचपन से ही घर के काम सिखाएं जाते है छोटी–छोटी बच्चियों पर घर के काम की जिम्मेदारी डाल दी जाती है। उनकी माएं खेतों में काम करती है तो बच्चियों घर पर खाना बनाना छोटे भाई– बहनों की देखभाल करती है, जबकि यह समय उनकी शिक्षा का होता है यही कारण है कि प्राथमिक शिक्षा भी बहुत मुश्किल से प्राप्त करती है।

प्रायः यह निम्न जीवन स्तर व्यतीत करने वाले परिवारों में देखा जाता है गाँवों में वैसे भी बालिकाओं की शिक्षा पर ध्यान नहीं दिया जाता, वैसे सदियों से चली आ रही है। यह मानसिकता गाँवों में प्रायः देखने को मिलता है, हॉलाकि आज के समय में इस मानसिकता में सुधार आ गया है। सरकार द्वारा चलाए जा रहे शिक्षा अभियान से शिक्षा में काफी सुधार देखने को मिला है। ग्रामीण क्षेत्रों में काफी लोग इसके प्रति जागरूक नहीं है। ग्रामीण क्षेत्र में सुख सुविधा कम होती है वहाँ के विद्यालयों में शिक्षा उतनी बेहतर नहीं होती है,लोग अपनी बेटियों को दूर शिक्षा दिलाने नहीं भेजते है जिसके चलते उन्हे ग्रामीण क्षेत्र में रहकर पढ़ना होता है जहां शिक्षा के साधन बहुत सीमित है उच्च शिक्षा का अभाव है।

लैंगिक भेदभाव– लैंगिक भेदभाव भारत के कई क्षेत्रों में व्याप्त है गाँव तो इसके केन्द्र है। हरियाणा, राजस्थान,उत्तरप्रदेश राज्यों में ये अधिकतम देखने को मिलता है। हमारा समाज पितृप्रधान समाज है जहां समाज में पुरुषों को विशेष स्थान प्राप्त है, जो लैंगिग भेदभाव का कारण है यहाँ पुरुष और महिला दोनों कामकाजी हो फिर भी घरेलू काम महिलाओं के हिस्से में ही है, क्योंकि यह एक सामाजिक सोच है कि पुरुष घर के काम नहीं करेगा। इसी लैंगिक भेदभाव के कारण महिलाओं को उनके घरों तक सीमित रख

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

दिया और उन्हें चुनाव, चर्चा प्रमुख त्योहारों आदि में भाग लेने जैसी किसी भी खुले स्थान के गतिविधि में भाग लेने की अनुमति नहीं होती है।

बाल विवाह– भारत में बाल विवाह पूरी तरह से अवैध प्रथा है, लेकिन वास्तविकता इससे बहुत दूर है राष्ट्रीय सांख्यिकी संगठन के अनुसार भारत में लगभग 47: महिलाओं की शादी 18 वर्ष की आयु से पहले कर दी जाती है। जो पितृसत्तात्मक समाज की कट्टरता तथा महिलाओं में प्रचलित निरक्षरता और जागरूकता की कमी के कारण यह समस्या गाँवों में अधिक गंभीर है,यह भारत में कभी न खत्म होने वाली परंपरा के रूप में भी जारी है।

दहेज– एक पुत्री के जन्म लेने के साथ ही उनके माता–पिता को दहेज की चिंता होने लगती है क्योंकि उन्हे बोझ माना जाता है यह मुख्यरूप से दहेज प्रथा के कारण है, जो भारत के ग्रामीण हिस्सों से लेकर शहरों तक में व्याप्त है एक सुयोग्य वर के लिए माता–पिता को अपना सब कुछ गवाना पड़ता है। यही एक ज्वलंत कारण है कि एक महिला की प्रतिष्ठा वो कितना दहेज लेकर आती है इससे लगाया जाता है। दहेज के कारण अनेक बहुओं को जिंदा जला दिया जाता है, कड़ा से कड़ा कानून बनाने के बाद भी मांग बढ़ती जा रही है। शहरी क्षेत्र में महिलाएं इस मुद्दे से निपटने के लिए पर्याप्त रूप से शिक्षित और सतर्क है, वे विवाह आत्मनिर्भर होने के बाद ही करना चाहती है जिससे दहेज के मांग से बच जाय। परंतु ग्रामीण क्षेत्र में ऐसा नहीं है।

उचित स्वच्छता का अभाव– गाँव में प्रायः बुनियादी सुविधायाओं का अभाव होता है, वहाँ सबसे बड़ी समस्या शुद्ध पेयजल की है, लोग इसके अभाव में अनेक बीमारियों से घिरे रहते है। साथ ही खुले में शौच भी एक प्रमुख समस्या है, पुराने खयालात के लोग शौचालय का प्रयोग करना उचित नहीं समझते, परंतु सरकार के स्वच्छता अभियान के तहत हर घर में शौचालय का निर्माण किया गया है, जिससे कई गाँव आज खुले शौच से आज मुक्त हो चुके है। साथ ही अब ग्रामीण स्तर पर शुद्ध पेय जल की व्यवस्था सरकार कर रही है जिससे काफी हद तक यह समस्या हल हुआ है इन उपर्युक्त समस्याओं से महिलाए सबसे ज्यादा परेशान होती है।

घरेलू हिंसा– घरेलू हिंसा की सबसे ज्यादा शिकार महिलाए होती है,ग्रामीण भारत में महिलाओं के साथ सबसे ज्यादा दुर्व्यवहार किया जाता है, उनके साथ मानसिक, शारीरिक, वैचारिक हिंसा की शिकार होती है। महिलाओं के साथ गुलाम की तरह व्यवहार किया जाता है, उनको बचपन से ही ये सिखाया जाता है उनको पराए घर जाना है, जिस घर उनकी डोली गई है अर्थी भी वही से उठेगी इसी कारण उनके साथ हिंसा होने के बाद भी लोक लाज के भी के कारण पुलिस में शिकायत करने से डरती है, घरेलू हिंसा अधिनियम 2005 बनने के बावजूद भी स्थिती में सामान्य सा सुधार हुआ है।

समस्या का समाधान– ग्रामीण समाज में महिलाओं की अनेक समस्याएं है, परंतु शिक्षा के प्रचार प्रसार एवं सरकार के चलाएं जा रहे जागरूकता अभियान काफी हद तक समस्याओं पर काबू पा लिया गया है, महिलाए अपने हक के प्रति ज्यादा जागरूक है और नेतृत्व का कार्यभार भी सम्भाल रही है। पंचायती राज में 33 प्रतिशत आरक्षण ने महिलाओं को आत्मबल दिया है जो गाँवों के विकास के साथ–साथ महिलाओं की स्थिती में सुधार हुआ है। सभी समस्याओं से जूझ रही महिलाओं के लिए इससे निपटने के कुछ उपाय भी है जैसे कि महिलाओं के लिए हमारे देश की केन्द्र एवं राज्य सरकारें कई सारी योजनाएं चला रही है जैसे कि लाड़ली लक्ष्मी योजना,सुकन्या समृद्धि योजना,कन्या विद्या धन योजना,बेटी बचाओं,बेटी पढ़ाओ योजना आदि जिसका लाभ उठाकर कई सारी समस्या से निजात है मिल सकता है। इसके अलावा महिलाओं को अपनी समस्या से निपटने के लिए जागरूक होना बहुत जरूरी है ,क्योंकि जब तक वे खुद की समस्या से निपटने के लिए जागरूक नहीं होंगी, वे आगे नहीं बढ़ पाएगी। साथ ही उन्हें घर की चहदीवारी से बाहर आना होगा और समाज में नेतृत्व कर्ता की भूमिका स्वयं निभाना होगा क्योंकि एक महिला की समस्या महिलाएं भली भाति जानती है और उससे निपटने के लिए सक्षम भी है, पंचायती राज में महिलाओं को आरक्षण देने का प्रमुख उद्देश्य यही है, कि उनको समाज की मुख्य धारा से जोड़ा जाए, जिससे समाज का भली–भाँति विकास हो सकें।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. ग्रामीण महिलाओं की समस्या एवं समाधान 2023 – प्रज्ञा कान्त।
2. ग्रामीण समाज में महिलाएं (विकिपीडिया)।
3. नव भारत के निर्माण में महिलाओं की बड़ी भूमिका (राज भवन)– श्री बंडारु दत्तात्रेय राज्यपाल।
4. भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिती एवं सामाजिक समस्याए (quest journals)।
5. योजना पत्रिका ।
6. द हिन्दू (समाचार पत्र)।

*****